

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री माँ दुर्गा नमः ॥

श्री देव्यपराध क्षमापन स्तोत्र

Devi Apradh Kshama Stotram — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: आदि शंकराचार्य ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

श्लोक १

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥

भावार्थ: हे दयामयी माँ जगदम्बा! मैं न तो किसी मंत्र का गूढ़ ज्ञान रखता हुँ और न ही यंत्र साधना जानता हुँ। मुझे न स्तुति करने का ढंग आता है, न आपका आवाहन करना और न ही ध्यान लगाना आता है। न मैं आपकी पूजा की विभिन्न मुद्राएं जानता हुँ और न ही व्याकुल होकर पुकारना जानता हुँ। मैं तो केवल इतना जानता हुँ कि आपकी पावन शरण में आना और आपका अनुसरण करना ही मेरे समस्त सांसारिक कष्टों और संतापों को हरने वाला है।

श्लोक २

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥

भावार्थ: हे संपूर्ण जगत का उद्धार करने वाली परम कल्याणी माँ शिवे! शास्त्रोक्त पूजा विधि का ज्ञान न होने से, पूजा सामग्री व धन के अभाव से, आलस्य के कारण अथवा असमर्थ होने से आपके पावन चरणों की सेवा-अर्चना में मुझसे जो भी त्रुटियां व भूलें हुई हैं, उन सबको कृपापूर्वक क्षमा कर दीजिए; क्योंकि संसार में पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए, किंतु माता कभी कुमाता नहीं हो सकती।

श्लोक ३

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥

भावार्थ: हे जननी! इस पृथ्वी पर आपके बहुत से सीधे-सरल और आज्ञाकारी पुत्र-पुत्रियां हैं, परंतु उन सबके बीच मैं ही सबसे अधिक चंचल और दुर्गुणों से भरा हुआ आपका बालक हुँ। फिर भी हे माँ शिवे! इस चंचलता के कारण मेरा परित्याग कर देना आपको कदापि शोभा नहीं देता; क्योंकि पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए, पर माता कभी कुमाता नहीं होती।

श्लोक ४

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥

भावार्थ: हे जगज्जननी माँ! मैंने कभी निष्ठापूर्वक आपके युगल चरणों की सेवा नहीं की और न ही आपको पूजा में विपुल धन या अमूल्य वस्तुएं अर्पित कीं। इसके बावजूद आप मुझ दीन बालक पर जो यह अहैतुकी और अनुपम वात्सल्य बरसाती रहती हैं, यह आपकी अपार ममता का ही प्रमाण है; क्योंकि पुत्र कुपुत्र हो सकता है, किंतु माता कभी कुमाता नहीं होती।

श्लोक ५

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥ ५॥

भावार्थ: हे गणेश जननी माँ! विभिन्न देवताओं की सेवा-पूजा के अनेक विध-विधानों में उलझकर और असमर्थ होकर मैंने अब पचासी वर्ष से अधिक की वृद्धावस्था बीत जाने पर सबको छोड़ दिया है। हे माँ! यदि इस असहाय अवस्था में भी आपकी कृपा मुझे प्राप्त नहीं होगी, तो मुझ निराधार और दीन को इस संसार में और किसका सहारा मिलेगा? मैं किसकी शरण में जाऊँगा?

श्लोक ६

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ॥ ६॥

भावार्थ: हे माँ अपर्णे! जब आपके पावन बीज-मंत्र का एक भी अक्षर किसी के कान में पड़ जाता है, तो उसका ऐसा अद्भुत फल होता है कि चांडाल (वाणीहीन मूर्ख) भी अमृत के समान मधुर वक्ता बन जाता है और अत्यंत निर्धन-कंगाल मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण-मुद्राओं का स्वामी बनकर सदा के लिए निर्भय हो जाता है। जब केवल नाम-श्रवण का इतना महात्म्य है, तो विधिपूर्वक आपका नित्य जप करने वाले को क्या फल मिलता होगा, यह कौन जान सकता है!

श्लोक ७

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्॥ ७॥

भावार्थ: हे भवानी! जो देवाधिदेव महादेव अपने विग्रह पर श्मशान की चिता-भस्म रमाते हैं, कालकूट विष का पान करते हैं, दिशाओं को ही वस्त्र के रूप में धारण करने वाले दिगंबर हैं, जटाधारी हैं, जिनके गले में सर्पों का हार है और हाथ में कपाल है—उन भूतनाथ पशुपति शिव जी को जो आज संपूर्ण ब्रह्मांड के एकछत्र 'जगदीश' (जगत के स्वामी) की सर्वोच्च पदवी प्राप्त है, वह केवल और केवल आपके साथ हुए पावन पाणिग्रहण (विवाह) का ही दिव्य फल है।

श्लोक ८

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः॥ ८॥

भावार्थ: हे चंद्रमुखी माँ! मुझे न तो मोक्ष पाने की कोई लालसा है और न ही इस संसार के वैभव-ऐश्वर्य की चाह है। मुझे न किसी अलौकिक विज्ञान की अपेक्षा है और न ही सांसारिक भोग-सुखों की इच्छा है। हे जननी! मैं आपसे केवल यही एक वरदान मांगता हुँ कि मेरी यह पूरी आयु 'मृडानी, रुद्राणी, शिव-शिव, भवानी' इन आपके पावन नामों का निरंतर जप करते हुए ही व्यतीत हो।

श्लोक ९

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव॥ ९॥

भावार्थ: हे माँ श्यामे! मैंने कभी शास्त्र सम्मत विविध उपचारों से आपकी आराधना नहीं की, उल्टे कटु व रूखे चिंतन में लीन रहकर अपनी वाणी से न जाने कितने अनुचित वचनों का पाप किया है। फिर भी हे कृपामयी माँ! यदि आप मुझ अनाथ, असहाय बालक पर थोड़ी सी भी दया-दृष्टि रखती हैं, तो यह आपके परम उदार मातृ-हृदय के ही सर्वथा अनुकूल व उचित है।

श्लोक १०

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति॥ १०॥

भावार्थ: हे करुणा के अगाध सागर की स्वामिनी माँ दुर्गे! जब मैं घोर विपत्तियों और संकटों में घिर जाता हुँ, तभी व्याकुल होकर आपका स्मरण करता हुँ। हे माँ! मेरे इस आचरण को मेरी धूर्तता या स्वार्थ मत समझिएगा; क्योंकि जब नन्हें बालकों को भूख और प्यास सताती है, तब वे केवल अपनी माँ को ही रो-रोकर याद करते हैं।

श्लोक ११

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परावृतं
न हि माता समुपेक्षते सुतम्॥ ११॥

भावार्थ: हे जगदम्बा! यदि मुझ जैसे अधम पर भी आपकी पूर्ण करुणा बरस रही है, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? क्योंकि जन्म-जन्मांतर के अनगिनत अपराधों और दोषों के जाल में घिरे होने पर भी कोई भी स्नेहमयी माता कभी अपने संतान की उपेक्षा नहीं करती।

श्लोक १२

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु॥ १२॥

भावार्थ: हे महादेवी! इस संपूर्ण चराचर जगत में मेरे जैसा कोई बड़ा पापी और भूल करने वाला नहीं है, और आपके जैसी महापापों का समूल नाश करने वाली कृपामयी माता भी कोई दूसरी नहीं है। हे माँ! इस सत्य को जानकर अब मैं पूर्णतः आपके चरणों में समर्पित हुँ, मेरे उद्धार हेतु जैसा आपको उचित लगे, वैसा कीजिए।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **उत्तम अवसर एवं समय:** इस स्तोत्र का पाठ प्रतिदिन अपनी नियमित पूजा अथवा दुर्गा चालीसा / दुर्गा सप्तशती पाठ के अंत में **क्षमा प्रार्थना** के रूप में करना चाहिए। विशेष रूप से **शुक्रवार**, **मंगलवार**, **दुर्गा अष्टमी**, **महानवमी** तथा **चैत्र व शारदीय नवरात्रि** के दिनों में इसका पाठ सहस्र गुना पुण्यदायी होता है।
- **पवित्रता एवं आसन:** स्नानादि से निवृत होकर स्वच्छ लाल अथवा पीले वस्त्र धारण करें। पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके कुशा या ऊन के पवित्र आसन पर बैठें।
- **पूजा वेदी एवं दीपक:** माँ दुर्गा के चित्र अथवा प्रतिमा के समक्ष गाय के शुद्ध घी का अथवा तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करें। धूपबत्ती जलाएं और वातावरण को सुगंधित बनाएं।
- **समर्पण सामग्री:** माँ को लाल चंदन या रोली का तिलक लगाएं, लाल पुष्प (विशेषकर गुड़हल या लाल गुलाब) अर्पित करें तथा मिष्ठान्न अथवा ऋतुफल का नैवेद्य लगाएं।
- **भावपूर्ण क्षमा याचना:** पूजा व आरती संपन्न होने के उपरांत दोनों हाथ जोड़कर, नतमस्तक होकर अत्यंत दीन और बालक भाव से लयबद्ध स्वर में इस स्तोत्र के सभी १२ श्लोकों का पाठ करें। अंत में माता से अपनी ज्ञात-अज्ञात भूलों के लिए मन ही मन क्षमा याचना करें और साष्टांग प्रणाम करें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **पूजा व अनुष्ठान की संपूर्णता एवं निर्दोषता:** स्तोत्र में साधक प्रार्थना करता है — *'विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया, विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्'*. इस स्तोत्र के पाठ से पूजा-अर्चना में हुई किसी भी प्रकार की कमी, विधि-भंग अथवा मंत्र-दोष का निवारण हो जाता है और साधना संपूर्ण फल देने वाली बनती है।
- **घोर संकटों और विपत्तियों से तत्काल रक्षा:** श्लोक १० में कहा गया है — *'आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि, नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति'*. जब साधक घोर विपत्ति, रोग, भय अथवा शत्रुओं से घिर जाता है, तब इस स्तोत्र का पाठ करने से माँ दुर्गा एक कृपालु माता की भांति दौड़ी आकर उसकी रक्षा करती हैं।
- **दरिद्रता का नाश और वाणी में मधुरता:** श्लोक ६ में स्तुति की गई है — *'श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः'*. माँ के नाम और स्तोत्र के प्रभाव से दरिद्र व्यक्ति भी धन-धान्य से संपन्न हो जाता है तथा मंदबुद्धि साधक की वाणी में भी सरस्वती का वास होकर अद्भुत प्रभाव आ जाता है।
- **समस्त संचित पापों का समूल नाश:** स्तोत्र का अंतिम श्लोक उद्घोष करता है — *'मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि'*. साधक के जन्म-जन्मांतर के जटिल पाप, अपराध और मानसिक संताप माँ जगदम्बा की असीम करुणा से भस्म हो जाते हैं और उसे परम शांति व मोक्ष की प्राप्ति होती है।